

ऐसे होगा संस्कार परिवर्तन...

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू

परमिता परमात्मा शिव बाबा हमें मनुष्य से देवता बनाने आये हैं। हमारे मन को, हमारी बुद्धि को और हमारे संस्कारों को पूरा स्वच्छ करने, उन्हें मूल स्थिति पर ले जाने के लिए हमें ज्ञान दे रहे हैं। हम पहचानते चलें स्वयं को और अपने मन को निर्मल करते चलें, बुद्धि को स्वच्छ और सद्विवेक से भरपूर करते चलें और अपने संस्कारों को बड़ा सुखदाई, बहुत पवित्र और जैसे हमारे संस्कार सतपुग में ऐसे ही बनाते चलें।

संस्कार, यह सब संस्कार अब हमें बदलने हैं। हमारे संस्कार तो बहुत डिवाइन हैं। याद करें अपने उस सुन्दर स्वरूप को, सतयुगी स्वरूप को, याद करें अपने पूज्य स्वरूप को जिसमें हम दाता हैं, जिसमें किसी से कुछ लेने की इच्छा हमारे पास नहीं है। केवल देने वाले हैं। कइयों में मांगने के संस्कार होते हैं। मान शान के पीछे भागने के संस्कार होते हैं। वे कोई भी कर्म तभी करते हैं जब वहाँ से मान मिलता हो। यदि मान नहीं मिलता तो सेवा को छोड़ देते हैं। इन सब संस्कारों का हमें सम्पूर्ण रूप से त्याग करना है।



कइयों के संस्कार उन्हें बहुत परेशान करते हैं। किसी का 'काम' का संस्कार बहुत होता है तो विषय विकारों के बिना रह ही नहीं पाते। किसी में क्रोध करने का संस्कार होता है, तो छोटी-छोटी बातों में भी क्रोध करते रहते हैं। किसी में रूसने का संस्कार होता है, किसी में ज़िद करने का संस्कार होता है, किसी में दुःखी रहने का संस्कार होता है तो किसी में कड़वे चंचन बोलने का संस्कार होता है। दूसरों को देखने का संस्कार, सदा दूसरों के बारे में सोचने का संस्कार यानी परचितन का

तो अपना एक सम्पूर्ण स्वरूप अपने सामने इमर्ज करें। अपने से कुछ दूरी पर एक चित्र बना लें अपना, यह है मेरा सम्पूर्ण स्वरूप जिसमें मेरा संस्कार सम्पूर्ण सुखदाई है। विदेही स्थिति के संस्कार। सम्पूर्ण पावन और निर्मल। बिल्कुल निश्चिन्त। जिसमें कोई मैल नहीं। जिसे कोई चिंतायें नहीं। जो बहुत लाइट है, हल्के रहने का संस्कार है। ऐसा अपना स्वरूप सामने बनायें। स्वयं को संकल्प दें कि मेरे संस्कार दैवी हैं... साधारण नहीं। यह वर्तमान के संस्कार मेरे संस्कार नहीं हैं।

बहुत अच्छी मनोवैज्ञानिक विधि है स्वयं को ट्रेनिंग देने के लिए... जो हमारे वर्तमान संस्कार हैं, जिनके कारण हम संगठनों में, अपने परिवारों में या सेवाओं में सफल नहीं हो पाते, शांतमय वातावरण नहीं रख पाते, उन संस्कारों के लिए हम रोज़ कम-से-कम पाँच बार स्वयं को यह फीलिंग दिया करें कि यह मेरे संस्कार नहीं हैं। यह तो रावण के संस्कार हैं। इन पराये संस्कारों को मैंने अपना कैसे मान लिया! मैं कैसे कह सकती हूँ कि मेरे अन्दर बहुत फीलिंग का संस्कार है। यह संस्कार मेरे अंदर है ही नहीं, यह तो मायावी संस्कार है। मेरे संस्कार तो यह हैं जो सामने खड़े हैं (लक्ष्मी नारायण)। ऐसे अपने स्वरूप को देखते हुए अपने को जब बार-बार पावरफुल सूति दिलायेंगे कि मेरे संस्कार यह नहीं यह है, तो संस्कार बदलते जायेंगे। जो गलत संस्कार हमारे अन्दर आ गये थे उन्हें हमने अस्वीकार कर दिया है, इसलिए वो हमारा साथ छोड़ कर चले जायेंगे और जिन्हें हम स्वीकार कर लेंगे... यह संस्कार मेरे हैं... तो वह संस्कार पुनः पुनः हमारे अन्दर भरते जायेंगे।

योगाभ्यास...

तो आज सारा दिन अपने दिव्य संस्कारों को देखेंगे। विशेष रूप से अपने भविष्य स्वरूप के नशे में रहेंगे। मेरा स्वरूप तो यह है। अपने देव स्वरूप को बार-बार इमर्ज करेंगे और बाबा से बुद्धियोग लगायेंगे कि बाबा आप हमें इतना बड़ा भाग्य देते हो! हमारे सोये हुए भाग्य को जगाते हो! आज बाबा से बात करते रहेंगे, उन्हें धन्यवाद देते रहेंगे और महसूस करेंगे कि बाबा, सर्वशक्तिवान तो हमारे सिर के ऊपर छत्रछाया है।

हो जाए तो उत्तरना शुरू हो जाता है। विषय अर्थात् पृथ्वी, मिट्टी। और अगर विषयों से अनासक्त हो जाए, तो चढ़ना शुरू हो जाता है। सीढ़ी वही है। जो विषयों में जीता है, वह रोज़-रोज़ नीचे की तरफ ढ़लान पर खिसलता जाता, फिसलता जाता।

और ध्यान रहे, खिसलना आसान है, फिसलना आसान है। उत्तर हमेशा आसान होते हैं। क्योंकि गुरुत्वाकर्षण ही खींच लेता है, हमें कुछ करना नहीं पड़ता। चढ़ाव कठिन होते हैं। जैसे कोई कैलाश पर्वत पर चढ़ रहा हो। जैसे-जैसे ऊँचाई पर पहुँचता है, वैसे-वैसे कठिनाई होती है। तब छोटा-सा भार भी बहुत भार मालूम होता है। एक छोटा सा झोला भी कधेर पर लटका कर चढ़ना मुश्किल होने लगता है। तो जैसे-जैसे यात्रा ऊपर पहुँचती है, वैसे-वैसे बज़न उसे छोड़ने पड़ते हैं। वही अनासक्ति है। बज़न छोड़ना होगा।

ज़मीन पर चल रहे हो तो ढोओ जितना ढोना हो; लदे रहो गधों की भाँति, कोई चिंता की बात नहीं। लेकिन अगर चढ़ना है पहाड़, तो फिर छांटना होगा, फिर असार को छोड़ना होगा। और ऐसी भी घड़ी आएगी जब सब

सीढ़ी एक, उत्तरना भी...

-पेज 3 का शेष

ज़्यादा नहीं है, और भी कुछ है; मिट्टी के जो पार है, उसकी तरफ इंगित है, इशारा है।

मन की प्रक्रिया तो चैतन्य की संभावना है। चैतन्य हों, तो ही मन हो सकता है। मन है सीढ़ी। एक छोर लगा है मिट्टी से और दूसरा छोर छू रहा है अमृत को। सीढ़ी एक ही है। जिस सीढ़ी से तुम नीचे आते हो, उसी से ऊपर भी जाते हो। ऊपर और नीचे आने के लिए दो सीढ़ियों की ज़रूरत नहीं होती, सिर्फ दिशा बदल जाती है। यूँ भी हो सकता है कि तुम सीढ़ी पर चढ़ते हुए आधी यात्रा पूरी कर लिए हों और एक सोपान पर खड़े हो, और दूसरा आदमी सीढ़ी से उत्तर रहा है, वह भी उसी सोपान पर खड़ा है, फिर भी बहुत भिन्न हैं। क्योंकि एक चढ़ रहा है, एक उत्तर रहा है। एक ही जगह है, मगर उनका एक ही कोटि में स्थान नहीं बनाया जा सकता। एक उत्तर रहा है, गिर रहा है, एक चढ़ रहा है, ऊर्ध्वगमी हो रहा है।

मन तो सीढ़ी है। अगर विषयों से आसक्त

हो जाए तो सब छोड़कर ही पहुँचोगे। सीढ़ी वही है। एक में बोझ बढ़ता जाता है, एक में निर्बोझ बढ़ता जाता है। एक में विषय बढ़ते जाते हैं, एक में घटते जाते हैं। एक में विचारों का जाल फैलता जाता है, एक में क्षीण होता चला जाता है।

इसलिए यह सूत्र ठीक कहता है कि मन ही कारण है संसार का और मन ही कारण है मोक्ष का। मन ही बांधता है, मन ही मुक्त करता है। आदमी प्रज्ञावान हो, तो मन से ही रास्ता खोज लेता है अ-मन का।

अ-मन शब्द बड़ा प्यारा है। नानक ने उसका बहुत उपयोग किया है। कबीर ने भी। समाधि को अमरी दशा कहा है। उर्दू और उर्दू से सम्बन्धित भाषाओं में अमन का अर्थ होता है: शांति। वह भी प्यारी बात है। क्योंकि जैसे-जैसे ही तुम मन से पार जाने लगोगे, अ-मन होने लगोगे, वैसे-वैसे जीवन में शांति की फुहार, बरखा होने लगेगी। फूल खिलेंगे मौन के। आनंद के स्वर फूटेंगे। जीवन के दूरने बहेंगे।



कुशीनगर-उ.प्र.। पदरौना की रानी साहिबा व कुवर आर.पी.एन. सिंह को ईश्वरीय निमंत्रण देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेट करते ब्र.कु.मीरा।



मोतिहारी-बिहार। 'सात दिवसीय तनाव मुक्ति राजयोग शिविर एवं श्रीमद् भागवद् कथा' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उषा, माउण्ट आबू तथा अन्य।



शामली-उ.प्र.। आध्यात्मिक सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. गीता, माउण्ट आबू। साथ हैं सांसद हुकम सिंह, ब्र.कु.सरला, ब्र.कु. भारत भूषण, पानीपत तथा अन्य।



सुनाम-पंजाब। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान अग्रसेन सभा के अध्यक्ष श्यामलाल और सरनेस सिंह राजयोगिनी ब्र.कु. उषा को सम्मानित करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. मीरा।



मऊरानीपुर-उ.प्र.। 'मेला जल विहार महोत्सव' का उद्घाटन करते हुए पूर्व विधायक डॉ. रश्मि आर्य, पप्पू सेठ, चेयरमैन हरिचंद्र आर्य, ब्र.कु. चित्रा, ब्र.कु. शैलजा, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. जूली तथा अन्य।



सूरत-अडाजण(गुज.)। 'सुखमय जीवन समय की मांग' विषयक विशाल कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद सी.आर. पाटील, सेंट्रल बैंक के सीनियर रिजनल मैनेजर सैलेबेटर जी, मुधा डाइंग मिल के डायरेक्टर विनोद पालीवाल, रश्मि सेट पीटर्सर्बर्ग की निर्देशिका ब्र.कु. संतोष तथा ब्र.कु. दक्षा।



सूरत-अडाजण(गुज.)। 'सुखमय जीवन समय की मांग' विषयक विशाल कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद सी.आर. पाटील, सेंट्रल बैंक के सीनियर रिजनल मैनेजर सैलेबेटर जी, मुधा डाइंग मिल के डायरेक्टर विनोद पालीवाल, रश्मि सेट पीटर्सर्बर्ग की निर्देशिका ब्र.कु. संतोष तथा ब्र.कु. दक्षा।